17 जुलाई 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 45, अंक : 08
जुलाई (द्वितीय), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

मंगल आमंत्रण — पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट के तत्त्वावधान में — **अपूर्व अवसर**

45वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, दिनांक 31 जुलाई से रविवार 07 अगस्त 2022 तक)

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आध्यात्मिकसत्पुरूष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश में संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित इस शिविर में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित श्री नियमसार महामण्डल विधान का आयोजन किया जाएगा। साथ ही मुमुक्षु समाज के मूर्धन्य विद्वानों के व्याख्यानों के माध्यम से अध्यात्म की गहन चर्चाएँ की जायेगी।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा 'तत्त्वचिन्तन' विषय पर विशेष व्याख्यानों का लाभ मिलेगा

शिविर की भव्य आमंत्रण पत्रिका पृष्ठ क्रमांक 4-5 पर देखें।

श्री टोडरमल महाविद्यालय सत्र 2022-23...

उद्घाटन समारोह एवं प्रथम संगोष्ठी सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों में साप्ताहिक विचार गोष्ठी के अन्तर्गत सत्र 2022-23 की प्रथम संगोष्ठी एवं भव्य उद्घाटन समारोह दिनांक 10 जुलाई 2022 को सम्पन्न हुआ। 'हम और हमारा महाविद्यालय' विषय पर आयोजित गोष्ठी में महाविद्यालय के सम्पूर्ण परिचय एवं यहाँ आने के उद्देश्य को 7 वक्ताओं ने समझाया।

इस अवसर पर श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा एवं पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री का समागम प्राप्त हुआ।

गोष्ठी का मंगलाचरण विशुद्धि जैन, मुम्बई (उपाध्याय कनिष्ठ), संचालन सोहम शाह, सोलापुर व चेतन जैन, गुढ़ाचन्द्रजी (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं आभार प्रदर्शन पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी ने किया।

गोष्ठी के श्रेष्ठ वक्ता पुष्प जैन, आगरा (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

वर्षभर आयोजित होने वाली गोष्ठियों का संयोजक शास्त्री तृतीय वर्ष से समर्थ जैन हरदा, संदेश जैन दिल्ली, आर्जव मोदी विदिशा, चेतन जैन गुढ़ाचन्द्रजी एवं सोहम शाह सोलापुर द्वारा किया जाएगा।

23वाँ JAANA शिविर शिकागो में सानन्द सम्पन्न

शिकागो : यहाँ जैन अध्यात्म एकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका द्वारा आयोजित 23वाँ वार्षिक आध्यात्मिक शिविर दिनांक 01 जुलाई से 05 जुलाई 2022 तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रतिदिन प्रात: डॉ. भारिल्लजी द्वारा लिखित एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के पद्यानुवाद सहित पंचास्तिकाय मण्डल विधान का आयोजन हुआ। साथ ही डॉ. भारिल्ल द्वारा 'समाधि का सार' विषय के अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा पंचलब्धि (मोक्षमार्ग प्रकाशक) पर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई द्वारा प्रवचनसार गाथा 93-94 पर, डॉ. एस.पी. भारिल्ल द्वारा आनन्द की अनुभूति पर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा समयसार कलश 12 पर विशेष प्रवचनों का लाभ मिला।

बच्चों के लिये विशेष पाठशाला चली व सभी को पुरस्कृत किया गया। एक दिन विशेष भक्ति संध्या में श्री पौरांगजी जैन ने प्राचीन भजनों की प्रस्तुति दी। आयोजन में अमेरिका के विविध नगरों से पधारे 150-200 साधर्मियों ने लगभग 50 घण्टे धर्म लाभ लिया। साथ ही उक्त चारों विद्वानों के सान्निध्य में क्रमबद्धपर्याय विषय पर गोष्ठी सम्पन्न हुई।

संपूर्ण आयोजन श्री अतुलभाई खारा, श्री अनन्तजी पाटनी एवं श्री तन्मयभाई शाह सहित सम्पूर्ण JAANA टीम के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

39 सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

- डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

(गतांक से आगे...)

सम्यग्ज्ञान का अन्यथा स्वरूप....

शास्त्रों में शास्त्राभ्यास करने से सम्यग्ज्ञान होना कहा है; इसलिए शास्त्राभ्यास में लगा रहता है, सीखता है, सिखाता है, सुनता है, सुनाता है, याद करता है; परन्तु प्रयोजन पर दृष्टि नहीं करता। पूरा समयसार कंठस्थ कर लेता है; परन्तु भावभासन नहीं करता॥ यदि समयसार शब्द का ही वास्तविक अर्थ समझ ले तो समयसार पढ़ने की आवश्यकता भी न पड़े। स्वयं शास्त्राभ्यास करके औरों को पढ़ाता है और इसी में स्न्तुष्ट होता हुआ महंतपना मानता है। पण्डितजी उससे कहते हैं कि ज्ञानाभ्यास तो अपने लिए किया जाता है और यदि सहज ही किसी का भला होता हो तो हो।

कितने ही जीव शास्त्राभ्यास के नाम पर व्याकरण, न्याय, काव्यादि पढ़ते हैं। उनसे पण्डितजी कहते हैं कि यह तो लोक में पाण्डित्य दिखाने के लिए हैं; परन्तु यहाँ तो आत्महितकारी शास्त्रों का अभ्यास करना ही कार्यकारी है। पण्डितजी व्याकरणादि के शास्त्रों के अभ्यास का निषेध नहीं कर रहे हैं; अपितु सतर्क कर रहे हैं कि यदि बुद्धि थोड़ी हो तो आत्महित के शास्त्रों को पढ़ना, वरन् व्याकरणादि के अभ्यास में ही आयु पूर्ण हो जाएगी और तत्त्वज्ञान की प्राप्ति नहीं होगी।

यहाँ कोई कहे कि हम व्याकरणादि का अभ्यास नहीं करेंगे। उससे कहते हैं कि उनके अभ्यास के बिना महान ग्रन्थों का मर्म नहीं जान पाएगा, इसलिए इनका अभ्यास भी आवश्यक है।

फिर कोई कहे कि महान ग्रन्थ ऐसे क्यों बनाए जिनका व्याकरणादि के बिना अर्थ न खुले? हम सभी को समझ आए ऐसी सुगम भाषा में क्यों नहीं लिखा? उससे कहते हैं कि भाई सभी भाषाओं में प्राकृत, संस्कृतादि के शब्द ही हैं और देश-देश में भाषा बदलती रहती है। हर 2 कोस पर भाषा बदल जाती है। अतः कौन-सी भाषा में लिखे जा सकते थे? एक देश की भाषा के शास्त्र दूसरे देश में पहुँच जाये तो वहाँ उनका अर्थ कैसे समझेंगे? इसलिए प्राकृत, संस्कृतादि शुद्ध शब्दों में ग्रन्थ रचे। यदि व्याकरणादि का उत्तम प्रयोग नहीं करते तो शब्द का यथावत् स्वरूप भासित नहीं होता और ये शास्त्र महान कैसे कहलाते।

यहाँ कोई कहे कि यदि ऐसा है तो अब देश भाषा में, अंग्रेजी, गुजराती आदि भाषाओं में अनुवाद क्यों करते हो? पण्डितजी कहते हैं कि कालदोष से मंदबुद्धि जीवों के लिए करुणाबुद्धि से देश भाषा में ग्रन्थ रचते हैं। ताकि जो-जो व्याकरणादि का अभ्यास न कर सके वे भी इन ग्रन्थों का अर्थ समझकर अपना कल्याण करें।

तथा कितने ही जीव पुण्य-पापादि का निरूपण करने वाले प्रथमानुयोग के शास्त्रों का, क्रिया का निरूपण करने वाले चरणानुयोग के शास्त्रों का तथा गुणस्थान, कर्मप्रकृति आदि का निरूपण करने वाले करणानुयोग के शास्त्रों का अभ्यास करने में लगे रहते हैं। प्रयोजन का विचार किए बिना इन सभी को तोते की भाँति रटते रहते हैं; परन्तु इससे तो कार्य सिद्धि नहीं होती।

प्रथम तो सच्चा तत्त्वज्ञान हो फिर पुण्य-पाप के फल को संसार जाने, शुद्धोपयोग को मोक्ष जाने, गुणस्थानादि को जीव का व्यवहार निरूपण जानकर अभ्यास करें - तो सम्यग्ज्ञान होता है।

कितने ही जीव तत्त्वज्ञान के कारण अध्यात्मभूत द्रव्यानुयोग के शास्त्रों का भी अभ्यास करते हैं; परन्तु वहाँ जैसा निरूपण है उसके अनुसार आप का आपरूप और पर का पररूप श्रद्धान नहीं करते। मुख से तो यथावत् ऐसा निरूपण करते हैं कि जिससे अन्य जीव सम्यग्दृष्टि हो जाये; परन्तु स्वयं भावभासन नहीं करते।

जिसप्रकार कोई लड़का स्त्री का स्वांग बनाकर ऐसा गाना गाए, जिसे सुनकर अन्य पुरुष स्त्री कामरूप हो जाए; परन्तु वह तो जैसा सीखा वैसा कहता है, उसे कुछ भावभासन नहीं है; इसलिए वह स्वयं कामासक्त नहीं होता। उसीप्रकार यहाँ जैसा लिखा है वैसा उपदेश देता है; परन्तु स्वयं उसका भाव भासन नहीं करता; इसलिए स्वयं सम्यग्दृष्टि नहीं होता।

यहाँ पण्डितजी ने एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही कि किसी के भी उपदेश से किसी को भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो सकती है। अज्ञानी जीव की देशना भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में निमित्त हो सकती है; क्योंकि पूर्वकाल में हमने ज्ञानियों की सच्ची देशना तो सुनी ही है।

समयसारादि ग्रन्थ के आधार से कहते हैं कि 11 अंग 9 पूर्व का पाठी होने पर भी कार्य सिद्धि नहीं होती। प्रवचनसार का उद्धरण देते हुए कहते हैं ज्ञान के आधार से सर्व पदार्थों को हस्तामलकवत् जानता है; परन्तु मैं ज्ञानस्वरूप हूँ। इसप्रकार स्वयं को परद्रव्यों से भिन्न केवल चैतन्यरूप अनुभव नहीं करता। अतः आत्मज्ञान शून्य आगमज्ञान कार्यकारी नहीं होता।

इसप्रकार शास्त्रों को पढ़-पढ़ कर भी प्रयोजन पर दृष्टि न होने से अन्यथा स्वरूप भासित होता है, सम्यग्ज्ञान नहीं होता। **(क्रमशः)**

अष्टानिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

(1) जबलपुर (म.प्र.) : अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 6 से 13 जुलाई 2022 तक आचार्य कुन्दकुन्द वीतराग विज्ञान मण्डल एवं जैन युवा फेडरेशन, जबलपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, बड़ा फुहारा में डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित श्री समयसार महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर ने विधान की प्रत्येक गाथा एवं कलश के भाव को स्पष्ट किया। साथ ही उनके द्वारा प्रातः ग्रंथाधिराज समयसार (ज्ञायकभावप्रबोधनी) तथा रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक के आधार से सम्यकत्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि विषय पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला।

विधानाचार्य पण्डित विरागजी शास्त्री एवं श्री प्रशांतजी जैन थे। विधान आमंत्रणकर्ता श्री सतेन्द्रजी संदीपजी जैन परिवार, शहपुरा एवं डॉ. सनतजी सचिनजी जैन परिवार, कटंगी थे।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में श्री वीतराग विज्ञान मंडल जबलपुर के सभी कार्यकारिणी सदस्यों का निर्देशन एवं जैन युवा फेडरेशन के सभी सदस्यों का अथक सहयोग प्राप्त हुआ।

ज्ञातव्य है कि समाज के विशेष आग्रह पर १० जुलाई को **कटनी** में भी डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का विशेष प्रवचन हुआ।

(2) नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में शाश्वत अष्टानिका महापर्व बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात: जिनेन्द्र पूजन के अतिरिक्त ब्र. पण्डित धनेन्द्रजी दिल्ली के तीनों समय ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। अध्यक्ष श्री जयकुमारजी देवड़िया एवं महामंत्री श्री अशोकजी जैन के निर्देशन में सभी कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

(3) सिंगोली (म. प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में प्रातःकाल कल्पद्रुम महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर पण्डित अंकुरजी शास्त्री, खड़ैरी के प्रातः समयसार, दोपहर पुरुषार्थसिद्धिउपाय एवं रात्रि में कर्मसिद्धान्त विषय पर व्याख्यानों का लाभ मिला। साथ ही बालकक्षा, जिनेन्द्र भक्ति एवं अनेक रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम श्री सूरजमलजी, श्री पुष्पचंदजी, श्री बसंतीलालजी एवं श्री नवीनजी जैन के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

(4) सूरत (गुजरात) : यहाँ स्वाध्याय मण्डल सूरत के सौजन्य से श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान श्री प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित ज्ञाताजी झांझरी एवं पण्डित अरुणजी शास्त्री मौ की उपस्थिति रही। यह आयोजन श्री विशुभाई, श्री नितिनजी अजमेरा, श्री संजयजी दीवान, श्री वीरेशजी कासलीवाल आदि के सद्प्रयासों से सम्पन्न हुआ।

(5–6) कोटा (राज) : रामपुरा यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन रामपुरा में पण्डित कमलेशकुमारजी शास्त्री ग्वालियर का समागम प्राप्त हुआ। **इंद्र विहार** में ब्र. कैलाशचन्दजी अचल का सान्निध्य प्राप्त हुआ। दोनों स्थानों पर प्रातः जिनेन्द्र पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, दोनों समय विद्वानों के प्रवचन एवं बाल कक्षाओं का आयोजन हुआ।

(7–15) मुंबई : अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर ब्रहद मुंबई के तत्त्वावधान में मुंबई के विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में **जवेरी–बजार** में पण्डित निलेशभाई, **दादर** में पण्डित राजेशभाई शेठ, **मलाड ईस्ट** में पण्डित अनिलजी शाह, **घाटकोपर** में पण्डित विनीतजी टाया, **वसई** में पण्डित अभिषेकजी, **बोरिवली** में पण्डित निखिलजी शास्त्री, **मलाड** एवरशाइन में पण्डित राहुलजी शास्त्री, **दहीसर** में पण्डित विवेकजी जैन एवं **भायंदर** में पण्डित अंकुरजी शास्त्री द्वारा महती धर्मप्रभावना हुई।

दिल्ली के विद्यानन्द सभागृह में डॉ. संजीव गोधा

दिल्ली : यहाँ कालकाजी स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर के आचार्य विद्यानन्द निलय सभागार नई दिल्ली में 7 जुलाई 2022 को प्रात:काल 17वीं बार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धर्मप्रभावना कर अमेरिका से पधारे अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुरके ग्रन्थाधिराज समयसार विषय पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि कनाड़ा जाते समय 2 जून को भी यहाँ आपके प्रवचन का लाभ मिला था।

कार्यक्रम का आयोजन अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चक्रेशजी जैन, महामंत्री श्री अनिलजी पारसदासजी जैन, कोषाध्यक्ष श्री ए.के. जैन एवं श्री सुशीलजी सेठी के निर्देशन में किया गया।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित...

'भरत के अन्तर्द्वन्द्व' का मंचन करायें

पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व दिनांक 31 अगस्त से 09 सितम्बर 2022 तक सम्पन्न होने जा रहे हैं। इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित बहुचर्चित नाटक **'भरत के अंतर्द्वन्द्व'** का अपने नगर में मंचन कराएँ।

इस महान कृति में चक्रवर्ती भरत के सर्वांगीण व्यक्तित्व को बहुत ही कुशलता के साथ दर्शाया गया है।

यदि आप अपने स्थान पर इसका मंचन कराना चाहते हैं तो नाटक की स्क्रिप्ट एवं वीडियो उपलब्ध करा दी जाएगी। नाटक के निर्देशन एवं इसके अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार की सहायता हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर तत्पर रहेगा।

सम्पर्क करें – पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री – 9079061701

मंगल आमंत्रण

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

45वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 31 जुलाई 2022 से रविवार, दिनांक 07 अगस्त, 2022 तक

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

आपको सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की शृंखला में 45वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर रविवार, दिनांक 31 जुलाई 2022 से रविवार, दिनांक 07 अगस्त, 2022 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर एवं डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

शिविर व विधान के आमंत्रणकर्त्ता

श्रीमती कुसुमजी-महेन्द्रजी गंगवाल एवं
सुपुत्र राहुलजी-विनीतजी, गंगवाल परिवार, जयपुर

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता

श्रीमान प्रेमचन्दजी एवं सुपुत्र तन्मयजी-ध्याताजी बजाज परिवार, कोटा
श्रीमान अजितप्रसादजी जैन, दिल्ली
श्रीमान प्रदीपजी एवं सुपुत्र अरिहन्तजी-तिलकजी चौधरी परिवार, किशनगढ़
श्रीमती रेखा-संजयजी एवं सुपुत्र तीर्थेशजी, सुपुत्री मोक्षा दीवान, सूरत
श्रीमती शशि-सुरेशजी जैन, शिवपुरी
श्रीमती श्रीजी-अश्वनीजी एवं सुपुत्री अनिका जैन, दिल्ली

विधान के आमंत्रणकर्त्ता

पण्डित शिखरचन्दजी जैन, विदिशा
श्रीमती कविताजी-प्रकाशचन्दजी छाबड़ा, सूरत
श्रीमान हेमचन्दजी एवं सुपुत्र वरुणकुमारजी जैन, रेवाडी
श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल बापूनगर, जयपुर

ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह

रविवार, दिनांक 31 जुलाई 2022, प्रातः 8:00 बजे

मुख्य अतिथि	–	माननीय श्री शान्तिकुमारजी धारीवाल (नगरीय विकास एवं आवासन, स्वायत्त शासन, संसदीय कार्य मंत्री, राज. सरकार)
अध्यक्ष	–	श्रीमान सुशीलकुमारजी गोदीका (अध्यक्ष – टोडरमल स्मारक)
विशिष्ट अतिथि	–	श्रीमान कुलदीपजी रांका (प्रमुख सचिव, मुख्यमंत्री राज. सरकार) श्रीमान रविजी जैन (आयुक्त, जयपुर विकास प्राधिकरण)
ध्वजारोहणकर्त्ता	–	श्री निहालचन्दजी-घेवरचन्दजी ओसवाल परिवार, जयपुर
मण्डप उद्घाटनकर्त्ता	–	श्री शान्तिलालजी चौधरी, भीलवाड़ा
मंच उद्घाटनकर्त्ता	–	श्री ताराचन्दजी सौगानी, जयपुर
शिविर उद्घाटनकर्त्ता	–	श्री तन्मयजी-ध्याताजी एवं समस्त बजाज परिवार, कोटा

चित्र अनावरणकर्त्ता

पण्डित प्रवर टोडरमलजी – श्री ब्रजसेनजी जैन एवं सुपुत्र शोभितजी जैन, दिल्ली
आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी – डॉ. टी.सी. जैन एवं सुपुत्र CA लोकेशजी – CA अभिषेकजी, जयपुर

विद्वत्समागम

- डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर
- बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, खनियांधाना
- पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, जबलपुर
- पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली
- डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया, मुम्बई
- डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर
- डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर
- डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, दिल्ली
- पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, उदयपुर
- पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, कोटा
- पण्डित पीयूषजी शास्त्री, जयपुर
- डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ
- पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, कोटा
- डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री, बांसवाड़ा
- पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, जयपुर

दैनिक कार्यक्रम

प्रातः	5:15 से 6:00	–	प्रौढ़ कक्षा
	6:08 से 6:40	–	दादा (अरिहंत चैनल)
	6:45 से 8:00	–	श्री नियमसार महामण्डल विधान
	8:30 से 9:15	–	गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन
	9:15 से 10:15	–	प्रवचन – तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल
	10:30 से 11:30	–	विभिन्न कक्षाएँ
दोपहर	1:30 से 2:00	–	सी.डी. प्रवचन : पण्डित युगलकिशोरजी पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल
	2:00 से 2:30	–	छात्र विद्वान प्रवचन
	2:30 से 3:15	–	प्रथम व्याख्यान (समागत विशिष्ट विद्वानों द्वारा)
	3:15 से 4:00	–	द्वितीय व्याख्यान (समागत विशिष्ट विद्वानों द्वारा)
	4:15 से 5:15	–	विभिन्न कक्षाएँ
सायं	6:30 से 7:15	–	कक्षा – गुणस्थान विवेचन
	7:15 से 7:40	–	जिनेन्द्र भक्ति
	7:45 से 8:30	–	प्रथम प्रवचन (समागत विशिष्ट विद्वानों द्वारा)
	8:45 से 9:30	–	द्वितीय प्रवचन : पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर पण्डित अभयकुमारजी देवलाली

विशेष कार्यक्रम

बुधवार, दिनांक 3 अगस्त 2022
तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर में
शुक्रवार, 20 जनवरी से गुरुवार, 26 जनवरी 2023 तक आयोजित
श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का
मंगल आमंत्रण

इस अवसर पर श्रीमान महिपालजी शाह बाँसवाड़ा, श्रीमान अशोकजी जैन ज्ञानोदय भोपाल, श्रीमान विपुलभाई मोटानी मुम्बई, श्रीमान नितिनभाई शाह मुम्बई, श्रीमान सुनीलजी सर्राफ सागर, श्रीमान कमलजी पाडलिया इन्दौर, पण्डित सुनीलजी शास्त्री ग्वालियर, श्रीमती सोनलजी जैन इन्दौर, श्रीमती सृष्टि जैन इन्दौर आदि अनेक गणमान्य अतिथि भी पधार रहे हैं।

नोट
(1) शिविर में पधारने वाले सभी शिविरार्थीयों के लिए आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था रहेगी, आपके यहाँ से कितने व कौन -कौन भाई बहिन पधार रहे हैं - इसकी सूचना अवश्य देवें ताकि समुचित व्यवस्था की जा सके।
(2) कार्यक्रम स्थल एवं सम्पर्क सूत्र : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन (पंचतीर्थ जिनालय), कनोडिया कॉलेज के पीछे, ए-4, बापू नगर, जयपुर - 302015, फोन : 2705581, 2707458
(3) मुम्बई -जयपुर सुपर फास्ट, भोपाल-जोधपुर पैसेंजर, इन्दौर-जयपुर सुपरफास्ट, इन्दौर-जोधपुर इन्टरसिटी, जबलपुर अजमेर सुपरफास्ट (दयोदय) आदि ट्रेने दुर्गापुरा स्टेशन पर रुकती हैं; इनसे आने वाले यात्री यहीं उतरें एवं खजुराहो-उदयपुर एक्सप्रेस गांधीनगर स्टेशन पर रुकती है, इससे आने वाले यात्री यहीं उतरें।

शिविर के संरक्षक

श्रीमान अनन्तभाई ए. शेठ, मुम्बई
श्रीमान वसन्तभाई एम. दोशी, मुम्बई

निवेदक

सुशीलकुमार गोदिका — अध्यक्ष
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल — महामंत्री
एवं समस्त ट्रस्टीगण पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

सम्पर्क सूत्र : 8949033694

विशेष ध्यातव्य – कृपया आमंत्रण पत्रिका को मंदिरजी या सब देख सकें ऐसे सार्वजनिक स्थान पर अवश्य लगा देवें।

• पंचम शतक : श्रमण शतक •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

(दोहा)

जिसका जैसा परिणमन, होनहार अनुसार।
वह वैसा ही होयगा, भव्य करो स्वीकार।।76।।

सहज स्वीकृति धर्म है, सहज ज्ञान सद्ज्ञान।
सहज आचरण चरण है, होवे केवलज्ञान।।77।।

जो कुछ जैसा हो रहा, करो सहज स्वीकार।
यही सहजता धर्म है, सहजानन्द अपार।।78।।

सब कुछ नक्की सहज ही, नहीं कोई करतार।
यही अकर्त्ताभाव है, शिवमग का आधार।।79।।

दर्शन–ज्ञान–चरित्र सब, शिवमग के आधार।
सहज भाव से प्रगट हो, सहजानन्द अपार।।80।।

सहज ज्ञान दर्शन सहज, सहज चरण ही सार।
सहज ध्यान सहजात्म का, सहजानन्द अपार।।81।।

सहज सहजता सहज ही, दर्शन–ज्ञान अनन्त।
सहज परिणमन सहज में, होवे भव का अन्त।।82।।

सहज परिणमन धर्म है, सहज परिणमन सार।
सहज स्वभावी वस्तु ही, जीवन का आधार।।83।।

सभी वस्तुयें सहज हैं, सब में शक्ति अनन्त।
सभी निरन्तर परिणमें, सभी अनादि–अनन्त।।84।।

सहज परिणमन की धनी, सभी वस्तुयें नित्य।
अर अनित्य भी हैं सभी, सब है नित्यानित्य।।85।।

निज स्वभाव छोड़े नहीं, अतः सभी हैं नित्य।
और निरन्तर परिणमें, कहते उन्हें अनित्य।।86।।

बदलें पर बदलें नहीं, बदलाबदली रूप।
दोनों वस्तु स्वभाव हैं, वस्तुस्वरूप अनूप।।87।।

नहीं बदलना द्रव्य का, है यह नित्य स्वभाव।
अरे निरन्तर बदलना, है पर्याय स्वभाव।।88।।

द्रव्य और पर्याय हैं, दोनों वस्तुस्वभाव।
वस्तु दोनों रूप है, दोनों का सद्भाव।।89।।

नहीं बदलना वस्तु का, जैसा द्रव्य स्वभाव।
नित्य बदलना वस्तु का, है पर्याय स्वभाव।।90।।

एक समय इक साथ ही, बदलाबदली होय।
ज्ञानीजन अनुभव करें, इसमें शक न कोय।।91।।

मूल बात यह जान लो, अदल–बदल जो होय।
पहले से ही वह सभी, पूर्ण सुनिश्चित होय।।92।।

जब जैसा जिस वस्तु का, जो–जो होना होय।
इसमें संशय है नहीं, तब तैसा वह होय।।93।।

दृढ़ श्रद्धा अर ज्ञान हो, अर चरण उसी अनुसार।
होता है यह जानिये, जिनशासन अनुसार।।94।।

श्रमणजनों का समझिये, यह उत्कृष्ट स्वरूप।
अणुव्रतियों में भी रहे, इसका मध्यम रूप।।95।।

अविरत सम्यग्दृष्टि भी, मुक्तिमग के पूत।
उनमें भी रहता अरे, इसका अल्प स्वरूप।।96।।

श्रमण अणुव्रती अव्रती, सम्यग्दृष्टि जीव।
सब शिवपंथी भव्यजन, रहते रहें सदीव।।97।।

श्रमणजनों की भक्तिवश, अद्भुत श्रमणस्वरूप।
प्रस्तुत मैंने किया है, श्रमणों का यह रूप।।98।।

श्रमणजनों को समर्पित, सम्यक् श्रमण स्वरूप।
पठन–मनन–चिन्तन करो, यह श्रमणों का रूप।।99।।

इसके ही अनुसार हो, श्रमण–श्रावकाचार।
महाश्रमण महावीर का, कहना बारम्बार।।100।।

दशवी फाल्गुन सुदी की, सोल मार्च उन्नीस।
श्रमण शतक पूरा हुआ, नमो नमो आदीश।।101।।

–●–

प्रश्नोत्तरमाला

21

समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 186 – गाथा में दर्शन-ज्ञान-चारित्र के सेवन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्रकटता ही दर्शन-ज्ञान-चारित्र का सेवन कहा जाता है, यही आत्मा की उपासना है।

प्रश्न 187 – दर्शन-ज्ञान-चारित्र की उपासना को कौन-सी उपासना कहा जाता है? और क्यों?

उत्तर – दर्शन-ज्ञान-चारित्र - ये तीन हैं; अनेक हैं, भेद हैं; अत: इनकी उपासना को व्यवहार उपासना कहा जाता है।

प्रश्न 188 – निश्चय उपासना किसे कहा जाता है?

उत्तर – शुद्धनय के विषयभूत आत्मा की उपासना को निश्चय उपासना कहा जाता है।

प्रश्न 189 – शुद्धनय के विषय में किसके भेद को मलिन कहा जाता है?

उत्तर – शुद्धनय के विषय में दर्शन-ज्ञान-चारित्र के भेद को भी मलिनता कहा जाता है।

प्रश्न 190 – मोक्ष के इच्छुक पुरुषों को क्या करना चाहिए?

उत्तर – मोक्ष के इच्छुक पुरुषों को जीव को जानकर, श्रद्धानकर, अनुभव के द्वारा उसमें तन्मय हो जाना चाहिए।

प्रश्न 191 – निसर्गज सम्यग्दर्शन और अधिगमज सम्यग्दर्शन में क्या अन्तर है?

उत्तर – किसी जीव को देशनालब्धि पूर्वभव में यह बहुत पहले प्राप्त हुई हो और उस समय उसने पुरुषार्थ न कर पाया हो; इसकारण सम्यग्दर्शन की प्राप्ति भी उसे न हो पाई हो; बाद में बहुत काल बाद या अगले भव में वह पुरुषार्थ करे और सम्यग्दर्शन की प्राप्ति कर ले तो उसे निसर्गज सम्यग्दर्शन कहेंगे। तत्काल देशना का अभाव होने से उसे निसर्गज कहते हैं। देशना मिले और अल्पसमय में ही, उसी भव में ही पुरुषार्थ करके सम्यग्दर्शन प्राप्त कर ले तो उसे अधिगमज सम्यग्दर्शन कहते हैं। **(क्रमश:)**

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें – www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें – www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2022

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 13 अगस्त 2022	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
शनिवार 14 अगस्त 2022	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
रविवार 15 अगस्त 2022	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट – (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 एवं जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

प्रबन्धक – नन्दकिशोर पारीक, 7412078703

संयम की साधना, सिद्धों की अराधना, निजात्मा की प्रभावना के कारणभूत पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व दिनांक – बुधवार 31 अगस्त, 2022 से शुक्रवार 09 सितम्बर, 2022 तक सम्पन्न होंगे

दशलक्षण पर्व में प्रवचनार्थ स्वीकृति भेजें

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के तत्त्वावधान में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों/विदुषियों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में प्रभावनार्थ जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र प्रदान करें।

आप अपनी स्वीकृति जयपुर कार्यालय में पत्र/फोन/ई-मेल/व्हाट्सएप आदि किसी भी माध्यम से भेजे सकते हैं। यद्यपि सभी विद्वानों को दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, जयपुर द्वारा अनुरोध पत्र भेजे जा चुके हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से पत्र समय पर प्राप्त न हुए हो तो आप स्वयमेव ही अपनी स्वीकृति अतिशीघ्र हम तक पहुँचाने का कष्ट करें।

दशलक्षण महापर्व हेतु आमंत्रण भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर अपने नगर में विधान/प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटरहेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते विद्वान की उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में पूर्ण पता लिखें – नाम, स्थान, मोबाइल एवं तत्काल सम्पर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से अनुरोध है कि वे आमंत्रण-पत्र भिजवायें।

सम्पर्क सूत्र – दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन ए-४, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015
मोबाइल नं. – 9785649333, फोन नं. – 0141-2705581, 2707458, E-Mail : Ptstjaipur67@gmail.com

सर्वज्ञ भारिल्ल प्रतिष्ठित टाइम्स 40 अंडर 40 अवार्ड से सम्मानित

पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक विद्वान, प्रेरक वक्ता और उद्यमी सर्वज्ञ भारिल्ल को **'टाइम्स 40 अंडर 40'** अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। यह अवॉर्ड उन प्रतिभाशाली युवाओं का सम्मान है जो 40 साल से कम उम्र के हैं और सही मायने में गेम चेंजर रहे हैं। यह सम्मान उन्हें मशहूर फ़िल्मस्टार व समाज सेवी सोनू सूद ने गुरुग्राम में पत्रकारिता में जाना-पहचाना नाम टाइम्ज़ ग्रुप द्वारा आयोजित एक समारोह में दिया गया।

उल्लेखनीय है कि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों व तत्त्वप्रचार में आपका सक्रिय सहयोग रहता है। आपने समय-समय पर ऑनलाइन व ऑफलाइन माध्यम से अपने प्रवचनों से समाज को लाभान्वित भी किया है।

एक्सक्लूसिव टाइम्स 40 अंडर 40 अवॉर्ड विजेताओं को पहचानने के लिए, एक सर्वेक्षण किया गया और कई संस्थाओं का मूल्यांकन किया गया। निस्संदेह, विजेताओं ने एक सम्पूर्ण मानदण्ड के माध्यम से प्रदर्शन किया और शीर्ष 40 में जगह बनाई।

यह पुनर्स्थापित करता है कि श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय से शास्त्री उत्तीर्ण कर हमारे स्नातक हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं और तत्त्वप्रचार से समाज को दिशा दे रहे हैं।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2022

प्रति,